

1

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीरामविजयदशमोत्थाय प्रारंभः ॥



(2)

॥१॥

श्रीगणाधिप तये नमः॥ संतजं नाचिं मादिं मिळालिं॥ भैसें देखे निवा द्वे विधां विं न्वलिं॥ शब्द रत्ना
चिं भरणि भरलिं॥ वेणि आ णि लि भक्ति पेटें॥ १॥ पाहुनिया हि कानि जावडि॥ परिक्षि कतै शि चर
ले काढि॥ कि सुगरणि जै शि वाढि॥ अपेक्षा पाहुनि सुधिताचि॥ २॥ गात्रं पाहुनि भुषणें॥ ले
वविति पै शा हाणे॥ कि दिन मान पाहुनि॥ जाणे नि उष्ण कीर्णें॥ उदय जै सा पाविजे॥ ३॥ किं पा
हो नि समय घटिका॥ जे वि उदय पावेश सां का॥ कि वर्ष का कि च देखें॥ मेघ जै से वर्षति
॥ ४॥ कि रतु का कि ये ति फळे॥ कि उत्तम काळ पाहो नि भले॥ सत्कर्म करिति सकळें॥ नि
ष्काम बुद्धी करोनिया॥ ५॥ किं वेदाचें जंतर पाहुन॥ देख॥ चालीं तै ति शास्त्राचे तर्क॥
किं वळ म पाहुनि उदक॥ थां वे जै से तरे ने॥ ६॥ तै से श्रोत्यांचें जाणे नि जंतर॥ राम क
था भारं मिलि साचार॥ बोलिला वाल्मिक ऋषेश्वर॥ तै चि चरित्र परि सावें॥ ७॥ ६३॥

॥१॥

(2A)

शब्दवरिधिभरलाजपार॥ कवितालक्षणतारंथोर॥ स्फुर्तिवायुच्याबकेंसत्वर॥ जाहाजच
 लेंतरेने॥ ८॥ सद्गुरुसुपेचेंबंदर॥ तेथेंशब्दरत्नभरलेंजपार॥ संतपेंठेशिबाणिलिसाच
 र॥ ग्राहिकथोरह्मणोनियां॥ ९॥ तरिसादरनादमुनिधन॥ व्याजिशब्दरत्नंपरिक्षुन॥ अ
 सोपुर्वाध्याईसुमंतप्रधान॥ श्रीरामग्रहाक्षिपातला॥ १०॥ शोकाकुंकितहोउनि॥ दश
 रथपडलाकैकैसदनि॥ किंअग्निसंगेंकरनि॥ पुतळैसंबाहाकें॥ ११॥ ग्रहणकाकिंसुर्य
 चंद्र॥ दिसलिकळाहिणसाचार॥ किंपेवगलतसुकुमार॥ हंसजैसासपला॥ १२॥ तैसा
 चक्षिपंचरथ॥ पडलाअसेशोकभुत॥ सुमंतपाठविलात्वरित॥ श्रीरामाशिबाणावया॥
 ॥ १३॥ असोसुमंतह्मणेश्रीराम॥ रायेंबोलाविलेंकैकैधामा॥ तोंपुराणपुरुषसर्वोतरासा
 ॥ तात्काकचिचालिला॥ १४॥ रथिंबैसलातेचक्षणि॥ नवरंगमेघचापपाणि॥ भक्तकै

3

॥२॥

वारिकेवल्यदानि॥ वेदपुराणिवंद्यजो॥ १५॥ वस्त्राळंकारिमंडितपुर्ण॥ पाहति सर्वअयोध्या
जन॥ क्षणतिकोटयानुकोटिमिनकेतन॥ रामावरनिवोंवाळिजे॥ १६॥ श्रीराममुगुटा
व्यादिव्यकळा॥ रविमंडपतेणेउडळला॥ त्यालेजेसुर्यबुचकळला॥ प्रकाशपडला पृथिव
रि॥ १७॥ मकराकारशोभतिकुंडले॥ किंप्रलयअग्निनेनेत्रउघडिले॥ किंकल्पांतविजोचेउ
माळे॥ शितळजालेसर्वदां॥ १८॥ अनंतनाकसुर्याच्याकळा॥ रामरूपिलोपल्यासकळा॥
किंब्रह्मानंदवोतला॥ सगुणलिकाधरोनियां॥ १९॥ सुवर्णोदकनदिनिर्मळ॥ मेरुपाठारि
वाहेसदांकाळ॥ तैसाकेशरिटिकदिव्यभाका॥ श्रीरामाचे शोभनअसे॥ २०॥ आंगिंदिव्य
चंदनचर्चित॥ अयोध्येमज्जिबहुकत॥ जनप्राणदेखतांनाचता॥ निजानंदेंकरोनियां ॥२॥
॥२१॥ गुणिवोंविलिभगणेशकळे॥ तैसेमुक्तहारतेजागळे॥ किंअनंतब्रह्माडयेकवेळ॥

३४

येकसतेजेडोळति॥२२॥अपारराहिलेभक्तप्रेमक॥हृणोनिरेदावेलेंवक्षस्थक॥दिव्यतेजप
 दकनिर्मक॥प्रभेनिराककोंदेलें॥२३॥अजानबाहोरधुनंदन॥करिविराजतचापबाण॥क
 ठिमेखकापितवसन॥चपकेहुनिशककतजसा॥२४॥असोअैसारधुनाथ॥रथारुढविरंचि
 तात॥उपब्बदेशिचेशजेसमस्त॥देखेनियांआनंदले॥२५॥पुढेंच्यातुरंगदक॥धडकत
 वाद्यांचाकहोका॥रामपाहावयाशिसकक॥उतावकजनतेकों॥२६॥पाहातांरामाचेंमु
 खकमक॥हृणतिजन्मजातासफक॥राजआनंदलेसकक॥तमाकनिकदेखिला॥२७॥
 धन्यधन्यतोदशरथ॥उदीरेअवतरलारधुनाथ॥याशिराड्यपदयथार्थ॥देतिलआतां
 संभ्रमे॥२८॥तोसोहकापाहोनिनयना॥जाउंआपुन्यास्वस्थाना॥असोअैसामिखतरा
 मराणा॥कैकैसदनाप्रतिपैआला॥२९॥जवकिआलारधुनाथ॥फुंदफुंदारडेदशरथ॥लो

(५)

॥३॥

क बाहेरटाकुनिजात॥ रामपिलियाजवकिये॥३०॥ लक्ष्मणबाणिसुमंत॥ यो सहितप्रवेशे
रघुनाथ॥ तों मुर्छितपडतादशरथ॥ नयनिवाहतिअश्रुधारा॥३१॥ रामेंदशरथाशिके
लेनमन॥ बंदिलेकैकैचेचरण॥ येरहणेविजईपुर्ण॥ सर्वदाहिहेशितुं॥३२॥ श्रीरामपु
सेकैकैशि॥ कायवेधारायाचेमानसि॥ कांशयनकेलेसुमिशि॥ मजप्रतिसंगिजेले॥३३॥
कैकैसांगेसमाचार॥ रायेमजदिधलेदानवरा॥ तेमिमागलोंसाचार॥ दुखथोरवाटले॥३४॥
मगबोलेरघुनंदन॥ त्यामिभाकापुरविन॥ येरहणेतुंवनाकरिंगमन॥ चतुर्दशवर्ष
परियंत॥३५॥ सांगालेनेईसुमित्रासुत॥ राडकरिलमाझाभरथ॥ तुवनिहेशिलयेश
वंत॥ शिताकांतजवशहणे॥३६॥ मातेचिआज्ञासर्वथा॥ नमोउविप्रमाणशास्त्रार्थ॥॥३॥
संन्यासधेतलातहिमाता॥ बंदाविहेसाचार॥३७॥ प्राणाहुनिपलिकेड॥ माझाभरतमजजावडे॥

५४
 त्यासराड्येदेतांमजसांकडे॥ सर्वथाहिवाटेना॥ २५॥ भुधरअवतारलक्ष्मण॥ परमक्रोधा
 वलादारण॥ भूळताजांठिघालुना॥ नेत्रयुगळवटारिले॥ २६॥ जैसाविवेकबळंकरन॥ क्रो
 धजावरिनिसाधकजन॥ तैसाउगाराहिला॥ लक्ष्मण॥ मिडधरुनिश्रीरामाचि॥ २७॥ ज
 सोकैकैसनमुनिरामराणा॥ आलाकौशलेच्यासरना॥ परमआनंदवाटेमना॥ तपोव
 नाजावया॥ २८॥ दैत्यवधावयाजातोस्वानंद॥ गजवदनेजाणिबिरस्कंदे॥ नमिलिअ
 पर्णेचिंचरणारविंदे॥ ब्रह्मानंदंकरोनिया॥ २९॥ करजातांअमृतहरण॥ सुपर्णेवंदिलेजननि
 चेचरण॥ त्याचपरिरघुनंदन॥ कौशलेसतमस्कारि॥ ३०॥ सांगितलेसकळचर्तमान॥
 धगधगिलेकौशलेचेंमन॥ भुमिपडलिमुर्छायेउन॥ वाटेप्राणचालिला॥ ३१॥ वाटेहृद्दईश
 स्त्रवांचले॥ किलोमियाचेंधनहारिले॥ तैसेंकौशलेसवाटे॥ आज्ञामागतांश्रीरामे॥ ३२॥

(5)

॥५॥

मगहणेचनः शा मगात्र ॥ राममाझाराजिवनेत्रा ॥ मजसंडुनिपवित्रा ॥ कैसावनाजाशिल ॥
॥४६॥ माझेपुष्पवटिआंत ॥ राहेंचतुर्देशवर्षपरित ॥ कोणासनभेटेंतुंयथार्थ ॥ राहेंगु
सराचवा ॥४७॥ श्रीरामहृणमाते ॥ तैसेंनकेतोवेंवनासे ॥ सत्यकरावेंपितृवचनोते ॥ दं
उकारध्यालजाईनमि ॥४८॥ पश्वमेसरुगवळचंडकिर्ण ॥ परिमिनमोडिपित्रुवचन ॥ होई
नभाकेशिउतिर्ण ॥ नसेजनुमानसर्वथा ॥ जन्मानिजनकाचेपोरि ॥ साचनकरवे
त्याचिगोष्टि ॥ तरिअपकिर्तिनेश्रुष्टि ॥ भरीनियांउचंबळे ॥४९॥ साचनकरितांबडिलें
चेंवचन ॥ व्यर्थकायजन्मासयेउता ॥ जनिगनविधवेचेंसुंदरपण ॥ किंवाज्ञानदांमि
काचें ॥५०॥ किंवाउंबरिंजेभुरख ॥ जाण ॥ किंजजाकंठिचेंसुंदरपण ॥ जैसेस्वन ॥ कि
नरामाजिठकामिन ॥ किंकटकवनसघनपें ॥५१॥ किंजन्मांधाचेविशाळनेत्र ॥५२॥

॥४॥

किंमद्यपियाचें अपवित्रपात्र ॥ किंअदातयाचें उंचमंदिर ॥ व्यर्थ काय जाकोवें ॥ ५३ ॥ याला
 गितो पुत्र धन्य ॥ जो साच करि पित्रु वचन ॥ तरि मज वना जावया लागुन ॥ आज्ञा देई अंबेतुं ॥ ५४ ॥
 ह्मणोनि श्रीरामे धरिते चरण ॥ उभारा हिला कर जोडुन ॥ धवधवां वक्षस्थळ बडुन ॥ कौशले
 ने घेतले ॥ ५५ ॥ नगरि फुटलि मात ॥ किं वना जातो रघुनाथ ॥ वर्ष लाये कचि आकांत ॥ पड
 लि मुळित लोक तेव्हां ॥ ५६ ॥ कौशल्या ह्मणो रघुनंदन ॥ सकुमारा जगन्मोहना ॥ माझी मोडु
 नि आज्ञा ॥ कैसा वनास जातो शि ॥ ५७ ॥ श्रीरामास ह्मणो लक्ष्मण ॥ मज आज्ञा द्या विअणु
 प्रमाण ॥ कैकैचें शिर घेदुन ॥ आनंद विनस को शि ॥ ५८ ॥ रघुपतितुं वनास जातो यथा
 र्थ ॥ प्राण त्याजि लक्ष्मण ॥ राज्य बुडेल समस्त ॥ अयोध्या को सहोई लपै ॥ ५९ ॥ परमत्रे
 मळ बंधु भरत ॥ तो राज्य न करिये यार्थ ॥ ईचावध करितां सत्य ॥ तो हि सुख पावेल ॥ ६० ॥

6

॥५॥

सकळ जनार्थें कारण॥ कैकै असत्याचें भाजन॥ ईसटाकितो वधून॥ सकळ जनानंदति॥ ६१॥
जैशिसमुळ त्यागितां दुर्वासना॥ साधक पावति जात सरदना॥ किंरजनि सरतां सकळ जना॥
सुर्यादई आनंद॥ ६२॥ मग बोले श्रीराम॥ जाणोस जालिया विपरित कर्म॥ सहसा न करवें
हें कर्म॥ हृदई बंधीरिं लक्ष्मणा॥ ६३॥ कौशल्या सुमित्रा जैशामाता॥ तैशिचें कैकै जाणस
र्वथा॥ मातु वध केलिया तनता॥ मग येई कैकै आस्तातें॥ ६४॥ लक्ष्मण॥ ह्मणे श्रीरामा
तें॥ तरि मज न्यावें जि सांगातें॥ नाहि तरि मित्राणें दई नयेथें॥ मग तुवना सुरें जाय॥ ६५॥
तों सौमित्रा ह्मणे रघुनंदना॥ माझा लक्ष्मण नईवना॥ शेविल तुझिया निज चरणा॥ प्रे
क मभावे करोनिया॥ ६६॥ रामा तुज वेगळार्ये क्षण॥ सर्वथान के लक्ष्मण॥ वनि फळे जिव
न देईल आणुन॥ शये सत्तण निजा वया॥ ६७॥ तुझि शेवा करितां सौमित्रा॥ तेणें आनंद

॥५॥

मज्जपैथोर ॥ बैसें बोल तां सुमित्रे च नेत्रा ॥ प्रेमोदक भरो न आले ॥ ६५ ॥ मग उ ॥ निमिळे चें स
 माधान ॥ करोनियां लक्ष्मण ॥ सिध्य जाला प्रयाण ॥ वनाप्रतिकरावया ॥ ६६ ॥ कौशल्या
 ह्मणे रघुनेदना ॥ बोर मज्जत कुनि जा ते शिवना ॥ कठिण पाषाण तु सिया चरणा ॥ चालतां
 जाण सुपतिक ॥ ६७ ॥ तडितां बरे सर्व साजुन ॥ कैसा हा शिल वल्कलें वेष्टुन ॥ १३ मर परि
 यंकल्य जुन ॥ भुमिशयन केविकरि शि ॥ ६८ ॥ यजुनिरत्न मुष्ट सुंदर ॥ कैसारा खडिज
 टाभार ॥ रामा तु सितनुस कुमार ॥ वातु म्मे मल कि ॥ ६९ ॥ सुगंध परिमळल्य जुन ॥ कैसे
 आंगिचर्चि शिभस्म ॥ वनिराक्ष सदुर्धर परम ॥ छळावया तु जयेति ॥ ७० ॥ रणि सां पडशि
 तु जग जेठि ॥ मग तु सिकोण राखेल पाठि ॥ शोके कौटशल्या हृदय पिठि ॥ ह्मणे कस गोष्टि
 कैशि आतां ॥ ७१ ॥ मग जौषधें मोहारे नाना बाणोनि ॥ रामा चे दंडि बंधि जननि ॥ रामा स

(४)

॥६॥

लागेल वनिपाणि॥ औषधिकरि बाधि॥ ७५॥ वनिद्रिष्टा वेलरघुनाथ॥ ह्मणेनि मोहरे करिं बा
धत॥ कोणिय कपि डान होय थार्थ॥ जैशा वस्तु देत को शब्दा॥ ७६॥ तपुराण पुरषाचि जननि॥
वना निधतां चापपाणि॥ पंचभुतां शिकर जोडुनि॥ प्रार्थना करित भावार्थ॥ ७७॥ धरणि सकौ
शब्दा विन वित॥ माते श्रीराम तु सा आमात॥ या सरक्षिंतु यथार्थ॥ निज स्नेहें करोनियां॥
॥ ७८॥ आपें थें जाईल कमळ पत्राक्ष॥ आपें थें भसेंदे फळ वृक्ष॥ ताना संकटि विरपाक्ष॥
रक्षोया ससर्वदा॥ ७९॥ रातो लळक मेळें पर्णा॥ याहुनि सकुमार राम चरण॥ त्याचिये चर
णि खडे पाषाण॥ रुपों ने दिंन वनिये॥ ८०॥ आपा सकौ शब्दा ह्मणत॥ माझारघु विरहोईल
तुषार्थ॥ नद्यासरोवरें बहुत॥ पुर्ण करुनि ठेविंका॥ ८१॥ ह्मणे विश्वप्रकाश कान्चंडकिर्णा॥
तुं रक्षिं आपुन्माकुळ भुषणा॥ लुसिं किर्णे प्रताप मोहना॥ स्पर्शे नेदिं सर्वथा॥ ८२॥ ८३॥

॥६॥

लो क प्राणेश प्रमंजना ॥ रक्षि मासिया रघु नंदना ॥ तु सिया गुणे धु कि नयना ॥ मा सिया जाई ल
 सर्वथा ॥ ८३ ॥ उ षे षि ण तां रघु नाथ ॥ तु मं द मं द हो ई मा रत ॥ जे णे बु धा वे अ व नि जा कां त ॥ क
 रिं डै सें प्रा णे श ॥ ८४ ॥ अं व रा तुं नि र्वि का र पा हि ॥ शब्द वि ष य तु स्या ग ई ॥ मं जु क शब्द तु से ह द
 ई ॥ अं उ ज क रो त सर्व द ॥ ८५ ॥ ब्र ह्मा शि व ई दि रा व र ॥ अ ह्म दि ग्पा क्ये का ह श र द ॥ न व ग्र ह
 अ ह्म व सु द्वा द श मि त्र ॥ मा शार धु वि र र क्षा हो ॥ ८६ ॥ य स्य ग ण ग थ र्व कि न्भ र ॥ सि य चार ण र
 षे श्व र ॥ म र द्वा ग ण पि त्र ग ण सा चार ॥ मा शार धु वि र र क्षा हो ॥ ८७ ॥ दे व उ पे दे व क र्म ज दे व ॥ पा त
 क भो गि सर्व मा न व ॥ व न च रे अ णि ज क र्ण व ॥ मा शार धु वि र र क्षा हो ॥ ८८ ॥ च रा च र प्रा णि जे
 जे व हि ले ॥ च हुर बा णि मा जि ज न्म ले ॥ वे द शा स्त्रं पु रा णे स क र्मे ॥ ब्र ह्म सां व के र क्षा हो ॥ ८९ ॥
 क र जो उ नि कौ श ब्या स ति ॥ च रा च र जि वं शि प्रा र्थि ॥ पी र हा ना दि पु र ष र धु प ति ॥ ने ण

(8)

वेचिति ईयेशि ॥ ९० ॥ जोदानवकुळवैश्वानर ॥ साधुहसद्वनिभ्रमर ॥ आज्ञानछेदकदिवा
कर ॥ नेणवे साचारकौशल्या ॥ ९१ ॥ जोअरिचक्रवारणपंचानन ॥ किदुःखपर्वतभंजनस
हस्रनयन ॥ हंविष्णुफणिपाकविदासन ॥ सासुपर्णे रघुविरे ॥ ९२ ॥ जोसजनचकोरामृत
कर ॥ भक्तन्यातकसजळजळधर ॥ कि साधुनयन ॥ छत्रमित्र ॥ लोहासाचारभवतरला
॥ ९३ ॥ असोयाउपरिकौशल्याहणत ॥ चतुर्दशवर्षपरियंत ॥ व्यर्थदेहप्रेतवत ॥ कैसापा
कुंमिआलां ॥ ९४ ॥ कैसेपुर्विचेंकर्मगहन ॥ फळाजालेंमुबिहुन ॥ अमलदहाराजिवनयन ॥
वनासजातोयेवेळे ॥ ९५ ॥ लुंवनाशिजातोशिरधुनंदन ॥ स्तनिहाटलाप्रेमपाका ॥ माझ्या
विसावियामनमोहना ॥ गुणनिधानाजाउनको ॥ ९६ ॥ श्रीरामभुवनसुंदरा ॥ जोळसास ॥ ९७ ॥
कुमाराराजिवनेत्रा ॥ मुनिजनरंजनागुणसमुद्रा ॥ जाउनकोवनाले ॥ ९८ ॥ हृदईनसतारधुनंदन ॥

संततितेविपःतिजाण॥ कळात्याविकळापूर्ण॥ विद्यात्याचअविद्या॥९८॥ श्रीरामेविणकरिक
 र्म॥ तोचितयाशिपडलाभ्रम॥ सच्चिदानंदमेधःशाम॥ राकुनिमजजातेकिं॥९९॥ तवदेववा
 णिगर्जलिपाहिं॥ सर्वोठाईरामविजई॥ कळांतितयाशिभयनाहिं॥ हाशेषशाईअवतरला॥
 ॥१००॥ जैसाजिवजातांवैद्ययेउन॥ ह्मणेनुजासिवांचविन॥ तैसेंमायेसवाटलेंपूर्ण॥ आ
 काशवाणिजैकतां॥१०॥ जोअदिपुरुषनिविकार॥ कौशलेशिघालिनमस्कार॥ प्रदक्षणा
 करुनिसर्वेश्वर॥ मुखविलेकिजननिदं॥११॥ जोमायतितबगोचर॥ तेणेआंसुविभर
 लेनेत्रा॥ विमळांबुधारापवित्र॥ मुखावरुनिउतरला॥१२॥ मायेनेधांवोनितेवेकिं॥ मिठिरा
 माचेगळांधातलि॥ तोशोकजैकतांउर्विडळमळिलि॥ कविसिमुखेंनववर्णवे॥१३॥ ह्मणेक
 मळपत्राक्षारघुनंदना॥ तुवांकैकैचिपाळिलिआज्ञा॥ मानदिधलापित्रुवचना॥ माशि

९

॥८॥

अवज्ञाकों करिशि ॥५॥ जगदं द्यरघुनायक ॥ माते सहस्रणे न करिंशोक ॥ मिस खरपर तो नि
देख ॥ जननिये तो तु जपशि ॥६॥ असो शिते चिया मंदिरांत ॥ प्रवेश लाजन कजामात ॥
शि लाजलि आनंद भरिता ॥ मुदवों वा विचरोनियां ॥७॥ मनि जगन्माता विचारिता ॥ कां
येक ले च आले रघुनाथ ॥ संगे राजचिहें नाहि स ॥ चिंता काल ड्यान कि ॥८॥ रतांत सां
गेरघुनंदन ॥ आहिवना प्रतिकरितो गमन ॥ तुनां कौं शब्दे म्निशे वा कतन ॥ सुरेवं
येथे पिराहि ॥९॥ सुमित्रा नाणिके ॥ समान भजे सर्व गंध ॥ जनक ग्रहाशि नवज
वेंकदाहि ॥ कुरंगने त्रेजान कि ॥१०॥ वनाशि ये शिल तरि बहुत ॥ हेउकारण्य कठिण
पंथ ॥ वात शित उष्या यथार्थ ॥ न सोसे चितुसे नि ॥११॥ तव भूगार सरोवर मराळि ॥
गुण सरिता जनक बाळि ॥ सकुमार सुंदर चंपक कळि ॥ काय बोले तेथवां ॥१२॥ ६३॥

॥८॥

(१४)

आहा जंगदं द्या श्रीरामा ॥ निजभक्तकामकन्दमुमा ॥ गजास्यजनकाहृदयविश्रामा ॥ टाकु
 निआह्वानवजावे ॥ १३ ॥ जगजनकारधुविरा ॥ जनकजामातृजगदोद्धार ॥ नगरक्षकाज
 वजनेत्रा ॥ जबदगात्रारधुपति ॥ १४ ॥ जकचरैजकसोडुब ॥ वेगळिंहेतांत्यजितित्राण ॥
 दिजकुळंसआकाशावांचुन ॥ नकेगमनकोठेहि ॥ १५ ॥ दिपसांडुनिनिश्चिति ॥ प्रभाभरा
 हेकसांति ॥ कनकासटाकुनियांकाति ॥ कदापरतिनकेचि ॥ १६ ॥ रत्नावेगळिकळा ॥
 गेडिनसोडिगुळा ॥ किंकस्तुरिजैशिपरिमळा ॥ वेगळिनकेसर्वथा ॥ १७ ॥ शीवावेगळिन
 केअंबिका ॥ कीर्णेनसोडितिकदांअको ॥ साधुहृदयसांडुनिसद्विवेका ॥ कोठेजाणेंपै
 नाहि ॥ १८ ॥ ह्मणोनिरधुपतिकोमंळंगा ॥ दयाळाममहृदयपद्मभंगा ॥ तारिकांतकान
 वमेधरंगा ॥ मजटाकुनिनवजावे ॥ १९ ॥ सिंकुसखाबसतां पाहि ॥ मगकांतारिंहितां

(10)

॥९॥

मय नाहि ॥ शितेचिंशब्दरत्ने जैकोनिहृदि ॥ जगदासासंतोषला ॥ २० ॥ ज्ञानकिंचेवचन
सुधास्मा ॥ कर ॥ तेणे तोषले रामकर्णचकोर ॥ किवचनमेधगर्जे तांगंभिरा ॥ मनमयोरनुत्य
करि ॥ २१ ॥ रघुपतिहृषणे ईदुवदने ॥ श्रीवशिष्ठाचे चरणधरणे ॥ मजवनाप्रतिपाठवणे ॥
हेचविनवितयाप्रति ॥ २२ ॥ तुजनेतां वनाप्रति ॥ जनाशब्दिलोकनिंदिति ॥ यालागिंपु
सोनवशिष्टाप्रति ॥ समागमेनिघावे ॥ २३ ॥ वशिष्टाचियचरणि ॥ नमनकरि जगत्रजन
नि ॥ हृषणेमिरघोतमाशिसांगालिणी ॥ वनवशिष्टाहोईनमि ॥ २४ ॥ मगवशिष्टहृषणेरघुना
था ॥ संगेनेईजेजनकदुहिता ॥ सवेजसोदाससुमित्रासुता ॥ रक्षणार्थतुह्याते ॥ २५ ॥
जसोसैमित्रासहृषणेशयवेश ॥ वशिष्टग्रहिंआहेममधनुष्य ॥ अक्षयभातेविशेष ॥ २६ ॥
रदशस्त्रंआणविं ॥ २७ ॥ आपुलेंसंग्रहधनरघुविर ॥ याचकांशिवटिउदार ॥ गुरुग्रहशिद्रव्यअपा

॥९॥

॥

(१०४)

नस्त्रंभुषणंथाडिलिं॥२७॥आणिकनानावस्तुसंपत्ति॥पाठविन्यागुरग्रहाप्रति॥सद्गुरुशि
 जेनभजति॥अभाग्यनिश्चितितेचपै॥२८॥तनमनधनेंशिंशरण॥श्रीगुरुसनभजेजोअ
 पण॥तोजाकोजरिशस्त्रप्रविण॥नकरितागुरुभजनतरेना॥२९॥व्यर्थगेलेतयाचेंतपा॥ज
 कोजकोतयाचाजप॥व्यर्थकायकोरजप्रतापा॥गुरुस्वरूपनावडेड्या॥३०॥सद्गुरुचेघरिंआप
 दा॥आपणभोगिसर्वसंपदा॥त्यानपवित्राचेंमुखकदां॥द्विष्टिनपाहावेकनांतिं॥३१॥त
 रितैसानकेंरघुविर॥गुरुग्रहाप्रतिअपार॥द्रव्यवस्त्रेनकेंकार॥पाठविलेतथवां॥३२॥गुरु
 पुत्रपरमसुज्ञ॥आदरेअपिठावोठाउन॥आपुलिवस्त्रंभुषणंकाडुन॥त्याशिसंपुर्णलेवि
 लिं॥३३॥शितेनेवस्त्रंभुषणअपार॥सुयज्ञाशिदिथलिसत्वर॥रथदेउनियांगुरुपुत्रा॥नि
 जग्रहाशिपाठविठा॥३४॥सकळऋषिंच्याग्रहाप्रति॥द्रव्यपाठविरघुपति॥चौदावसेषे

॥

(11)

॥१०॥

निश्चितिं॥ पुरो न उरे अपार॥ ३५॥ विश्वामित्र आसित कणव॥ दुर्वास भगुवाम देव॥ अंगिरादि
द्विज सर्व॥ द्रव्य राघव पाठ विसंते॥ ३६॥ कौशल्या सुमित्रा माता जाणा॥ द्रव्ये पाठ वितया
च्या सदना॥ रामे आपल्या शेवक जना॥ द्रव्य अपार दिथेले॥ ३७॥ हीर दिदिन कुटुंब व छळ॥
अशक्त पंगु अंध के वळ॥ तयांशि द्रव्य समाकनिक॥ अपार देता जाहाला॥ ३८॥ ईह अत्यंत
गौर उना॥ सर्वो स ह्ये रघु नंदन॥ स्नेह न सां वाम जवरुन॥ सुरेंकरु निनाद वि॥ ३९॥
मग कै कै च्या ग्रहास॥ येता जाला जगन्निवास॥ तेव्हा अयोध्ये च्या लोकास॥ कळ्यांत चिवा
टला॥ ४०॥ अयोध्ये च्या नर नारि॥ अश्रु बाहूति सर्वा चे नेत्रि॥ गोब्राह्मण कै वारि॥ वना
जातो ह्ये नियां॥ ४१॥ ईकडे कै कै च्या सदनात॥ रामे नमिला दशरथ॥ प्रदक्षणा करुनि
विलोकित॥ वदनार विंदपि लियां च॥ ४२॥ दशरथ ह्ये रघु नंदन॥ राजिवनयना जातो शिवना॥

॥१०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com